

कृति-1

कला की पाठ्यपुस्तक
कक्षा 6 के लिए



0679

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

नाम _____

कक्षा _____

विद्यालय _____

0679 – कृति –1

कला की पाठ्यपुस्तक कक्षा 6 के लिए

ISBN 978-93-5292-683-1

प्रथम संस्करण

अगस्त 2024 भाद्रपद 1946

पुनर्मुद्रण

मार्च 2025 चैत्र 1946

PD 50T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2024

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- ❑ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- ❑ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- ❑ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस

श्री अरविंद मार्ग

नई दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेंशन, होस्टेले

बनाशंकरा III इस्टेज

बैंगलूरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैपस

निकट: धनकल बस स्टॉप पानिहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगंवि

गुवाहाटी 781 021

फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: एम.वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	: बिज्ञान सुतार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	: जहान लाल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: अमिताभ कुमार
सहायक उत्पादन अधिकारी	: सायुराज ए.आर.

ले-आउट: मनीष छाटपार, मुंबई

चित्रांकन और कवर : संतोष मिश्रा, एमआर्ट्स, दिल्ली

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है, जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं शताब्दी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। नई शिक्षा नीति में निहित चुनौतियों और सुझावों को आधार बनाते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में सभी स्तरों के पाठ्यचर्या क्षेत्रों को तैयार किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का उद्देश्य बुनियादी और आरंभिक स्तर पर बच्चों के पंचकोशीय विकास को सुनिश्चित करते हुए मध्य स्तर पर उनके विकासात्मक स्वरूप की ओर अग्रसर करना है। इस प्रकार, तीन वर्षों को समाहित करते हुए मध्य स्तर (कक्षा 6 से कक्षा 8 तक) आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो उनकी विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करें और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करें। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषयों को सम्मिलित किया गया है, जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं आरोग्य और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के बीच इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। यह निर्णायक भूमिका बच्चों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति के मध्य एक विवेकपूर्ण संतुलन स्थापित करेगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के मध्य उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों की तैयारी भी आवश्यक है।

कृति-1 की विषयवस्तु में, दृश्य कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच के कला रूप सम्मिलित हैं। कृति-1 विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता का पता लगाने, कौशल विकसित करने, स्वयं को गढ़ने और अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री में दृश्य और अन्य घटकों सहित समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली, हमारी संस्कृति में रची-बसी भारत की कलात्मक और सांस्कृतिक परंपराओं एवं मूल्यों को सम्मिलित किया गया है। सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिले, इसके लिए कलाओं में सभी जेंडर एवं विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों की प्रतिभागिता सुनिश्चित की गई है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी एकीकरण का उचित उपयोग करते हुए क्यू.आर. कोड के माध्यम से अतिरिक्त शिक्षण-अधिगम संसाधनों को पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है।

मेरे विचार से, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए कृति-1 पाठ्यचर्या के लक्ष्यों में सफल रही है— सर्वप्रथम, विषय और विषयवस्तु के उचित चयन के माध्यम से विद्यार्थियों में स्वाभाविक जिज्ञासा को बढ़ावा देना तथा रचनात्मकता, अन्वेषण और विभिन्न कला रूपों के अनुभवों हेतु विद्यालयी शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में परिकल्पित इस स्तर पर उनमें मुख्य दक्षताओं का विकास करने में यह पुस्तक सफल रही है। पाठ्यपुस्तक की इकाइयाँ और अध्याय सभी विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में समायोजित करने के उद्देश्य से तैयार किए गए हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और अभिव्यक्ति अभिप्रेरित होती है। यहाँ सुझाई गई प्रत्येक गतिविधि विद्यार्थियों को और अधिक सीखने के लिए उन्हें प्राकृतिक परिवेश, दिन-प्रतिदिन के कार्य या मानवीय गतिविधियों जैसे संसाधनों की खोज करने की यात्रा पर ले जाएगी। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी अमूल्य होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं, जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

नई दिल्ली
जुलाई 2024

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

पुस्तक के बारे में

कृति-1, कला की पाठ्यपुस्तक है, जो आपको दृश्य और प्रदर्शन कलाओं के विशाल और रोमांचक संसार से परिचित कराएगी, जिसका उद्देश्य रचनात्मकता को विकसित करना, कला की विभिन्न विधाओं से विद्यार्थियों का परिचय करवाना और उनके कलात्मक कौशल को विकसित करना है। छठी कक्षा की इस पाठ्यपुस्तक में दृश्य कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच के विभिन्न कलात्मक पक्षों को समाहित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में निहित शिक्षा के लक्ष्यों, दक्षताओं एवं अधिगम के परिणामों पर आधारित कृति-1 विभिन्न कलाओं में सृजनशीलता को समझने की पुस्तक है। इसमें अनेक व्यावहारिक गतिविधियाँ और प्रेरक परियोजनाएँ दी गई हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी अपने आस-पास की गतिविधियों में कला की भूमिका को समझने और उसकी सराहना करने में समर्थ होंगे। विद्यार्थी प्रसिद्ध कलाकारों के बारे में और उनकी रचनाओं, शैलियों और विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हुए स्वयं रचनाएँ करेंगे। प्रत्येक गतिविधि विद्यार्थियों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करेगी।

इस पुस्तक में दी गई पाठ्यसामग्री के अतिरिक्त विभिन्न गतिविधियों और अतिरिक्त संसाधनों को डिजिटल रूप में भी दिया गया है। इसके माध्यम से पाठ्यपुस्तक के आरंभ में, प्रत्येक अध्याय के आरंभ में एवं आवश्यकतानुसार अनेक स्थानों पर क्यू.आर. कोड दिए गए हैं। कला की विशेषता है कि यह विभिन्न रुचियों और वर्गों के लोगों से जुड़ सकती है। कोई सामान्य व्यक्ति भी कला के माध्यम से आनंद प्राप्त कर सकता है। हमारे देश की धरोहर, संस्कृति और परंपरा का एक लंबा इतिहास है, जहाँ विभिन्न कलाओं का अभ्यास किया जाता रहा है।

“कला मानवीय सौंदर्य एवं संवेदनशीलता पर केंद्रित होती है। सौंदर्यात्मक अनुभूति का तात्पर्य है, अपनी सौंदर्यबोध की क्षमता एवं विवेक के माध्यम से कला निर्माण की प्रक्रिया को परिष्कृत करना। कला व्यक्तिगत रूप से सौंदर्य, आकार, समरूपता, प्रारूप एवं संचालन द्वारा हमारी भावनाओं को जाग्रत कर अभिव्यक्त करने का माध्यम है। कलात्मक क्रिया में वैचारिक ज्ञान एवं प्रक्रियात्मक ज्ञान दोनों समाहित हैं जिसमें मनुष्य के सन्निहित संवेदनात्मक एवं भावनात्मक अनुभव सम्मिलित हैं।” (विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पृष्ठ 294)। इस प्रकार पुस्तक निर्माण प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में यह मूल विचार है कि विद्यार्थी कला की सभी विधाओं का आनंदित होकर अध्ययन करेंगे। इस पुस्तक के निर्माण

में यह ध्यान में रखा गया है कि पुस्तक का कोई भी अंश विद्यार्थियों के लिए बोझिल न हो और वे नए-नए प्रयोग करें। प्रत्येक विद्यार्थी कला के साथ अलग प्रकार से जुड़ता है। इसलिए विद्यार्थियों की कलात्मक गतिविधियों में शिक्षकों का भाग लेना लाभप्रद सिद्ध होगा।

कृति-1 की चार इकाइयाँ विशिष्ट रंगों के माध्यम से दर्शाई गई हैं—

❧ **दृश्य कला** के लिए पीला,

❧ **संगीत** के लिए नीला,

❧ **नृत्य** के लिए गुलाबी, और

❧ **रंगमंच** के लिए बैंगनी।

सभी इकाइयों को आनंददायी बनाने का विशेष प्रयत्न किया गया है।

‘दृश्य कला’ इकाई विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति को विकसित करने के लिए बनाई गई है, जिससे वे अपने दैनिक जीवन एवं स्थानीय परिवेश के अनुभवों के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करेंगे। इस इकाई में वे विभिन्न तकनीक और सामग्रियों के माध्यम से द्वि-आयामी एवं त्रि-आयामी गतिविधियों के कौशल से परिचित होंगे। सभी अध्यायों में, जहाँ विद्यार्थियों को सैकड़ों वर्षों से उपयोग में लाई गई विभिन्न सामग्रियों, सतहों और तकनीकों से परिचित कराया गया है वहीं उन्हें स्वयं खोजने और बनाने के लिए भी प्रेरित किया गया है।

प्रारंभिक अध्यायों में चित्रण के विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से विद्यार्थियों की अवलोकन क्षमता के विकास पर बल दिया गया है। इस पुस्तक में प्राकृतिक रंग बनाने की तकनीक, रंग-मिश्रण एवं रंग आभा और शेड के निर्माण, जैसी कुछ रमणीय गतिविधियाँ भी दी गई हैं। विद्यार्थी स्वयं की मुहर, चित्र, कागज की कला एवं फ्लिप बुक बनाने की प्रक्रिया के माध्यम से नए अनुभव प्राप्त करेंगे।

इस इकाई में कुछ भारतीय कलाकारों और कला परंपराओं की झलक भी सम्मिलित है, जिसे पुस्तक में उल्लिखित उदाहरणों के अतिरिक्त भी अन्य कलाकारों और कला परंपरा के विषय को समझाकर और भी समृद्ध किया जा सकता है। विद्यार्थी अनिवार्य रूप से अपने क्षेत्र की विभिन्न कला-विधाओं, परंपराओं और कलाकारों के बारे में विचार-विमर्श और अध्ययन करें। इस प्रकार की ज्ञान वृद्धि से विद्यार्थी प्रत्येक कार्य सौंदर्यबोध, रचनात्मकता एवं आलोचनात्मक विचार के साथ कर पाएँगे।

इस पाठ्यपुस्तक में 'संगीत' इकाई में ऐसी अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं, जिनसे विद्यार्थी अपनी कलात्मक यात्रा में संगीत के विभिन्न सिद्धांतों को सीखेंगे। यद्यपि खोज की इस यात्रा में कुछ तत्व सहज और परिचित और कुछ पूर्णतया नवीन होंगे।

इस पुस्तक का उद्देश्य सभी पाठकों को भारतीय संगीत की देशव्यापी और विविधतापूर्ण धरोहर से परिचित कराना है जिसको स्थानीय लोग व्यवहार में लाते हैं। हमारे जीवन में संगीत का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रतिवर्ष विभिन्न प्रकार के उत्सवों जैसे— राष्ट्रीय त्योहार, सामाजिक उत्सव, कोई धार्मिक आयोजन, फसल कटाई आदि में संगीत उनका एक अभिन्न अंग है। इन उत्सवों पर गाए जाने वाले गीत और बजाए जाने वाले वाद्ययंत्र पारंपरिक होते हैं एवं मनुष्य की भावनाओं और समाज से जुड़े होते हैं। नृत्य-संगीत प्रत्येक व्यक्ति को उनके दैनिक जीवन के विभिन्न अनुष्ठानों और संस्कारों से जोड़ता है।

प्रत्येक व्यक्ति गीत और नृत्य का आनंद लेता है। विद्यार्थियों द्वारा संगीत के अनुभव को और भी आकर्षक और विविधतापूर्ण बनाने के लिए इस पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त माता-पिता, दादा-दादी और सामाजिक सदस्यों द्वारा गाए जाने वाले अन्य गीत भी सीखे जा सकते हैं। विद्यार्थियों के सूक्ष्म एवं स्थूल कला कौशल को निखारने हेतु संगीत में काव्य एवं लय, वाद्ययंत्रों की ध्वनि, अंग संचालन, संगीत पर अभिनय और नृत्य के लिए पद संचालन आदि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। संगीत का आनंद विद्यार्थियों को एक तनावमुक्त परिवेश प्रदान करता है। संगीत की आत्मा लोरियों, दादी-नानी के गुनगुनाने, खेतों में गाते किसानों के गीतों, चिड़ियों की चहचहाहट, भवनों की गुंजन या बारिश की बूंदों के खिड़की पर टिप-टिप कर बरसने में बसती है। आइए, अब हम संगीत के उन रत्नों की खोज करने चलें, जो समस्त भारत में फैले हुए हैं।

'नृत्य' की इकाई विद्यार्थियों को भारतीय नृत्य के विभिन्न स्वरूपों की विस्तृत झलक देगी। यह इकाई भारतीय लोकनृत्य का ज्ञानवर्धन करते हुए, विद्यार्थियों को छऊ अथवा यक्षगान, जैसे पारंपरिक नृत्यों से अवगत कराती है। यह इकाई विद्यार्थियों को धीरे-धीरे शास्त्रीय नृत्य के मूलभूत सिद्धांतों एवं तकनीकों से भी परिचित कराएगी। यह इकाई नवरसों के माध्यम से विद्यार्थियों को भावाभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करेगी।

हस्तमुद्राओं को भी सांकेतिक भाषा के लिए उपयोग में लाया गया है जिससे विद्यार्थियों को अवगत कराया जाएगा। यह इकाई नृत्य के माध्यम से जेंडर समानता पर भी ध्यान केंद्रित करती है तथा पाठ्यचर्या के एकीकृत पहलुओं पर भी विद्यार्थियों को अतिरिक्त जानकारी स्वयं प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

इस पाठ्यपुस्तक की 'रंगमंच' इकाई में रंगमंच के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक अध्याय रचनात्मक कौशल के विकास, कलात्मक अभिव्यक्ति के निखार एवं कला की समझ पर केंद्रित है। भाव की समझ एवं अभिव्यक्ति केवल कला के स्वरूपों के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में उचित भावनात्मक संतुलन बनाने के लिए भी अनिवार्य है।

इस इकाई के अध्याय, रूपसज्जा, वस्त्रसज्जा, रंगमंच, नाट्य लेखन एवं कठपुतली कला के तकनीकी सिद्धांतों से विद्यार्थियों को प्रायोगिक गतिविधियों के माध्यम से अवगत कराते हैं, जो प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी क्षमता को पहचानने एवं अपनी रुचि के क्षेत्र का चयन करने में सहयोग करते हैं। भारत की परंपरागत नाटक मंडली पर आधारित अध्याय निश्चय ही विद्यार्थियों को आकर्षित करेगा।

यह इकाई रंगमंच को एक सर्वांगीण दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए निर्मित की गई है, जो विद्यार्थियों को अन्वेषण, निर्माण और अभिव्यक्ति में उत्तरोत्तर संवर्द्धन का मार्गदर्शन करता है। रुचिकर अध्यायों एवं प्रायोगिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी अवश्य ही महत्वपूर्ण कौशल सीखेंगे और उनमें रंगमंच की विविधता की समझ का विकास होगा।

कृति-1 का अंतिम अध्याय सभी कला रूपों के एकीकरण पर आधारित है जिसका विषय है— पंचतत्वा। इसमें दी गई गतिविधियाँ पंचतत्त्वों पर केंद्रित हैं, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न कला स्वरूपों में अंतर-अनुशासनिक दृष्टिकोण से परिचित कराया जा सके। पुस्तक के अंत में मूल्यांकन का प्रारूप दिया गया है, जिसमें सभी कलाओं के मूल्यांकन हेतु एक रूब्रिक दिया गया है।

कला कक्षा की संरचना

कला की कक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें विद्यार्थी खुलकर कला की विभिन्न गतिविधियाँ कर सकें, जैसे— नृत्य, नाटक, चित्रण, गायन आदि। भौतिक परिवेश में ये स्वतंत्रता एवं सादगी के तत्व अवचेतन मस्तिष्क के विचारों में स्वतंत्रता एवं सादगी उत्पन्न करते हैं। कला कक्षा उपयुक्त उपकरणों से सुसज्जित एवं सूचनाप्रद प्रदर्शन सामग्रियों से समृद्ध होनी चाहिए। शिक्षक, विद्यार्थी एवं सहपाठियों में पारस्परिक विचार-विमर्श अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कला समय सारिणी

सभी कलाओं को सीखने के लिए संपूर्ण अकादमिक सत्र में प्रति सप्ताह 40 मिनट के पाँच कालांश आवंटित करने की आवश्यकता है। 40-40 मिनट के दो कालांश या एक संयुक्त कालांश भी कला के लिए आवंटित किए जा सकते हैं, जिससे विभिन्न कला गतिविधियों को पूरा करने में सुविधा होगी।

ज्योत्स्ना तिवारी
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

1. महेश चंद्र पंत, कुलाधिपति, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (अध्यक्ष)
2. मञ्जुल भार्गव, प्रोफेसर, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (सह-अध्यक्ष)
3. सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद
4. बिबेक देबरॉय, अध्यक्ष, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
5. शेखर मांडे, पूर्व महानिदेशक, सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
6. सुजाता रामदोरई, प्रोफेसर, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा
7. शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई
8. यू. विमल कुमार, निदेशक, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरु
9. मिशेल डैनियो, विजिटिंग प्रोफेसर, आई.आई.टी., गांधीनगर
10. सुरीना राजन, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.पी.ए.
11. चामू कृष्ण शास्त्री, अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
12. संजीव सान्याल, सदस्य, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
13. एम.डी. श्रीनिवास, अध्यक्ष, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई
14. गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.
15. रोबिन छेत्री, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम
16. प्रत्यूष कुमार मंडल, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17. दिनेश कुमार, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18. कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19. रंजना अरोड़ा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
(सदस्य-सचिव)

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

शंकर महादेवन, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

योगदान

आराधना गुप्ता, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

चिंथु साची, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

ज्योति भट्ट, भरतनाट्यम शिक्षक, पूर्णपरामति, बेंगलुरु

दीपा श्रीधर, विशेषज्ञ, संगीत शिक्षा

प्रियदर्शिनी घोष, विशेषज्ञ, नृत्य कला

बिंदु सुब्रमण्यम, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

बिदिशा हाजरा, सहायक आचार्य, संगीत, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

मधुसूदनन पी.वी., सहायक आचार्य, कला शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

मालविका राजनारायण, विशेषज्ञ, दृश्य कला शिक्षा

राजश्री एस.आर., वरिष्ठ परामर्शदाता, कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

शर्बरी बैनर्जी, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं सहायक आचार्य, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग,

रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्रीधर रंगनाथन, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा

सिद्धि गुप्ता, संकाय सदस्य, सृष्टि मनीपाल इंस्टिट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नॉलाजी, बेंगलुरु

सुधनवा ए.के., सहायक आचार्य, रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

अनुवादक

कपिल शर्मा, सहायक आचार्य, नाट्यशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

पंडित विजय शंकर मिश्र, लेखक, संगीत एवं नृत्य विशेषज्ञ

रामनाथ झा, आचार्य, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

समीक्षक

अनुतोष देब, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा एवं टी.जी.टी., आर्ट्स, (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय, गुवाहाटी

अनुराग बेहर, सदस्य, एन.सी.एफ.ओ.सी.

गोविंदराजु भारद्वाज, सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और निदेशक एवं आचार्य, स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मञ्जुल भार्गव, सह-अध्यक्ष, एन.एस.टी.सी

रिम्सी खन्ना, सहायक आचार्य, कॉलेज ऑफ आर्ट्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

सदस्य समन्वयक

ज्योत्स्ना तिवारी, सदस्य समन्वयक, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, कला शिक्षा और आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निरीक्षण समिति (एन.सी.एफ.ओ.सी.) के सम्मानीय अध्यक्ष एवं सदस्यों, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) कला के अध्यक्ष एवं सदस्यों और अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह के उन सभी सदस्यों का आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण तथा इसके विभिन्न विषयों को अंतिम रूप देने में अपना मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया है।

इस पाठ्यपुस्तक में जेंडर एकीकरण, समावेशन, मूल्यांकन आदि की समीक्षा के लिए परिषद् अपने संकाय के वरिष्ठ सदस्यों, सुनीति सनवाल, *आचार्य एवं विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; इंद्राणी भादुड़ी, *आचार्य एवं अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, *आचार्य एवं विभागाध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग और मिली रॉय, *आचार्य एवं विभागाध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग के प्रति आभारी है।

हम उन संस्थानों, संगठनों, व्यक्तियों को भी आभार ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने हमें इस पुस्तक के लिए उपयोगी लिखित सामग्री, चित्र, तस्वीरें, ऑडियो-वीडियो सामग्री आदि संसाधन प्रदान किए। इनमें संगीत नाटक अकादमी; कला उत्सव, रा.शै.अ.प्र.प.; सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र; भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्; बेंगलुरु के संस्थान- व्योम आर्टस्पेस एंड स्टूडियो थिएटर, अभिनय तरंग नाटकशाला, सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफोरमिंग आर्ट्स (सा.पा.), शंकर महादेवन संगीत अकादमी, सुनाद, बेंगलुरु; सुरभि थिएटर, हैदराबाद; नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली; राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय, नई दिल्ली; अजीम प्रेमजी फाउंडेशन; चिल्ड्रेंस लिटल थिएटर, कोलकाता; एक तारा; दी मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (दी क्रॉसबी ब्रॉउन कलेक्शन ऑफ म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट्स), न्यूयॉर्क; 'बैक टू स्कूल' प्रोजेक्ट 2023-24 ऑफ यूरोपियन यूनियन डेलीगेशन इन इंडिया बाय दिल्ली स्ट्रीट आर्ट; इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियन्स, बेंगलुरु; श्रीधर रंगनाथन, सी.ई.ओ. एवं सह-संस्थापक, शंकर महादेवन संगीत अकादमी, वाणी हेमीज; सा.पा. से अनुषा चेलअप्पा एवं क्षितिज कश्यप; अलोका कानुनगो; अर्पिता वेंकटेश; संजना घोष; देबांजलि बंदोपाध्याय; अनुपमा होस्केरे (पद्म श्री); धातु कठपुतली थिएटर, बेंगलुरु; शतावधानी आर. गणेश (प्रसिद्ध विद्वान) सम्मिलित हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् अंबि सुब्रमण्यम, *वायलीन प्रतिपादक*, संगीतकार, शिक्षक एवं सह-संस्थापक, सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफोरमिंग आर्ट्स (सा.पा.); जयंती कुमारे, *वीणा प्रतिपादक*, शोधकर्ता एवं

शिक्षक; विदुषी तारा कीनी, सलाहकार, शंकर महादेवन संगीत अकादमी, पाठ्यक्रम निर्माण, संगीत शिक्षा एवं भारतीय धरोहर संचार की विशेषज्ञ; शिवांगी पुरोहित, *नृत्य शिक्षिका*, केंद्रीय विद्यालय, आर.के. पुरम, सेक्टर 2, नई दिल्ली के सहयोग की सराहना करती है। परिषद् *प्रधानाचार्या*, मॉडर्न स्कूल, बाराहखंबा रोड, नई दिल्ली को कार्य में संलग्न विद्यार्थियों के फोटो लेने की अनुमति देने के लिए आभार व्यक्त करती है।

हम कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग में कार्यरत *वरिष्ठ अनुसंधान सहचारि* प्रतीक रंजन झा (संविदा), विवेक कुमार, अजय कुमार; *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* पुष्पिता मित्रा, ऋचा शर्मा, नेहा सिंह, दीपक कुमार ठाकुर, शैलेन्द्र कुमार; *टंकणकर्ता*, शिवम गौतम के सराहनीय योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं।

परिषद् इस पुस्तक के संपादन के लिए प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों दिनेश वशिष्ठ, *संपादक* (संविदा); अनुपमा भारद्वाज, *सहायक संपादक* (संविदा); संविदा पर कार्यरत प्रूफ रीडर आफरीन; राहिल अंसारी; सियाराम मीणा के प्रति आभार व्यक्त करती है। पुस्तक को अंतिम स्वरूप प्रदान करने के लिए परिषद् पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी प्रकोष्ठ एवं पूनम डोबरियाल *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), प्रकाशन विभाग के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
- (ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और
- (ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

प्यारे बच्चो

आपके हाथ में कक्षा 6 की कला की पाठ्यपुस्तक 'कृति - 1' है। कृति - 1, आप सभी के अंदर रचनात्मकता की जिज्ञासा जाग्रत कराने के उद्देश्य से बनाई गई है। आप जीवन के गत वर्षों में भी रचनात्मक रहे हैं। अब आप अपनी विद्यालयी शिक्षा के अगले स्तर में प्रवेश कर रहे हैं, जहाँ सीखने और प्रयोग करने के लिए बहुत कुछ है। यह पुस्तक आपको अपने आस-पास के परिवेश, पर्यावरण, लोगों और समाज के प्रति अधिक संवेदनशील बनाएगी।

जैसा कि आपने पिछली कक्षाओं में अनुभव किया है, कला के अनेक रूप हैं; आपको नृत्य करने, वाद्ययंत्र बजाने अथवा सुनने, लिखने, चित्र बनाने, पेंटिंग करने, मिट्टी और कागज के मॉडल बनाने, गाना गाने, नाटक, नकल करने और एनीमेशन आदि जैसी सृजनशील गतिविधियों में निश्चित रूप से आनंद आया होगा जिन्हें आप अपने दैनिक जीवन में, विद्यालय में, घर पर या यात्रा करते समय पसंद करते होंगे। आप अपने आस-पास कुछ देखते और अनुभव करते हैं, जैसे — अलग-अलग मौसम, प्रकृति बदलाव, पत्तों का सरसराना, फूलों में अनेक रंग और बनावट, मधुमखियों का भिन्नभिन्नाना, बगीचे में घूमती रंग-बिरंगी तितलियाँ, रेलगाड़ियाँ, हवाई जहाज, घर के दैनिक कार्य करते लोग इत्यादि, और इन पर आप विचार करने लगते हैं। ये आकर्षक घटनाएँ हैं, जो हमें सृजन करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। ये हमें यह सोचने के लिए भी बाध्य करती हैं कि यह सब क्या, कब, कैसे, क्यों होता है!

भारत की धरती हजारों वर्षों की मानव सभ्यता और शिक्षा-संस्कृति की साक्षी रही है। कला हमारे आस-पास चारों ओर है और हमें आनंदित करती है, चाहे हम सृजन कर रहे हों या उसका अनुभव, कला हमारे जीवन को और भी सुंदर बना देती है।

आप सभी के अंदर एक कलाकार है, जो बाहर आकर कुछ करने और बनने के लिए उत्सुक है। रचनात्मक बनने और कलात्मक सृजन के लिए आपको अवलोकनशील, काल्पनिक और संरचनात्मक होना होगा।

'कृति - 1' में आप उत्साह और आनंद से परिपूर्ण, चार कला रूपों का अनुभव करेंगे और सीखेंगे। आप अपने मित्रों, शिक्षकों और परिवार के साथ प्रतिदिन कुछ नया सृजन करेंगे।

कला की कक्षा आरंभ करने से पहले प्रार्थना

प्रायः कलाकार प्रदर्शन शुरू करने से पहले निम्न श्लोक का उच्चारण करते हैं। कला की कक्षा आरंभ होने पर इसे ऊँचे स्वर और अंग संचालन के साथ गा सकते हैं —

आङ्गिकं भुवनं यस्य, वाचिकं सर्व वाङ्मयम् ।
आहार्यं चन्द्र तारादि, तं वन्दे सात्त्विकं शिवम् ॥

अर्थ

जहाँ भौतिक शरीर ब्रह्मांड है,
वाणी या गीत सभी ध्वनियों का सार है,
अलंकार चंद्रमा और सितारे हैं,
मैं उस परम दिव्य परमेश्वर को नमन करता हूँ।

आप जिन चार कला रूपों का अध्ययन कर रहे हैं वे सभी एक-दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हैं —

आंगिक — शरीर के अंगों का संचलन, मुख और शारीरिक अंगों से किसी भाव को प्रकट करना।

वाचिक — संवाद, पाठ, गान और गीत आदि।

आहार्य — रंग, वेशभूषा, अलंकरण आदि।

सात्त्विक — कलाकार और प्रेक्षकों के लिए भाव स्थितियों और आध्यात्मिक अनुभवों को व्यक्त करना।

यह लगभग हजार वर्ष पूर्व आचार्य नंदिकेश्वर द्वारा लिखित ग्रंथ अभिनय दर्पण में उल्लेखित एक श्लोक है। आप क्यू.आर. कोड को स्कैन करके वीडियो के माध्यम से इसके विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

विषय-सूची

आमुख	iii
पुस्तक के बारे में	v
प्यारे बच्चो	xv

दृश्य कला

1. वस्तु-चित्रण	3
2. प्रारूपी चित्र में बदलाव	10
3. व्यक्ति-चित्रण	20
4. कागज के शिल्प	25
5. मुहर से छपाई तक	29

संगीत

6. संगीत एवं भाव	36
7. वाद्ययंत्र	47
8. ताल या तालम और राग या रागम	53
9. भारतीय संगीत में विविधता	61



10. गीत लेखन.....	70
11. संगीत और समाज	74

नृत्य

12. मेरा शारीरिक संचलन	79
13. नृत्य के माध्यम से अवरोधकों को तोड़ना	91
14. संचलन में सामंजस्य	97
15. भारतीय नृत्य	104

रंगमंच

16. भावों का अनावरण!.....	114
17. आइए, डिजाइन बनाएँ.....	127
18. 'कंपनी थिएटर' में	141
19. छाया और कठपुतलियों की कहानियाँ	145
20. भव्य समापन	154
21. कला रूपों का एकीकरण.....	157
22. मूल्यांकन	161

